website: www.sandhyadeep.world

नमो-नमो दुर्गे सुख करनी। नमो-नमो दुर्गे दुःख हरणी।।

बृहस्पतिवार, 10 सितंबर, 2026 ।

वर्ष 19 । अंक 143 । पृष्ठ 4 ।

आरएनआई नंबर : RAJHIN/2007/20298

व्हाट्स एप नंबर : 85291-15101

Email : berisgnr@gmail.com

साँध्यदीप

We Fight For Human Rights

क्या पार्षद पद के लिए मुकेश शाह को प्रतिष्ठा दांव पर लगानी चाहिए थी?

श्रीगंगानगर। नगर परिषद के दो वार्डों—36 और 34—के चुनाव इस बार शहर की राजनीतिक चर्चाओं में खासे महत्वपूर्ण बने हुए हैं। इन दोनों वार्डों में भाजपा ने क्रमशः महेश सारस्वत और बबीता अरोड़ा को प्रत्याशी बनाया है। इन दोनों प्रत्याशियों के प्रचार अभियान में उद्योगपति मुकेश शाह की सक्रियता भी चर्चा का विषय बनी हुई है।

मुकेश शाह को श्रीगंगानगर के प्रमुख उद्योगपतियों और कॉलोनी विकसित करने वाले कारोबारियों में गिना जाता है। शहर के विकास को लेकर उनके और रविशंकर गुप्ता के प्रयासों की चर्चा भी होती रही है। आधुनिक तकनीक और नियोजित विकास को ध्यान में रखकर कॉलोनियों के विकास की दिशा में किए गए प्रयासों को उनके समर्थक सकारात्मक उदाहरण के रूप में देखते हैं।

वर्तमान नगर परिषद चुनाव में शाह की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि वार्ड 36 के भाजपा प्रत्याशी महेश सारस्वत और वार्ड 34 की भाजपा प्रत्याशी बबीता अरोड़ा के लिए वे स्वयं प्रचार करते दिखाई दे रहे हैं। शाह अपने प्रभाव वाले क्षेत्र में दोनों प्रत्याशियों के लिए मतदाताओं से समर्थन मांग रहे हैं। महेश सारस्वत के प्रचार क्षेत्र में रिद्धि सिद्धि प्रथम तथा बबीता अरोड़ा के प्रचार क्षेत्र में रिद्धि सिद्धि द्वितीय प्रमुख क्षेत्र बताए जा रहे हैं।

राजनीतिक हलकों में यह भी चर्चा है कि दोनों प्रत्याशियों को भाजपा का टिकट दिलाने में मुकेश शाह की भूमिका रही है। हालांकि टिकट वितरण में उनकी भूमिका को लेकर भाजपा की ओर से कोई आधिकारिक विस्तृत पुष्टि सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आई है। इसलिए इसे राजनीतिक चर्चा के रूप में ही देखा जाना उचित होगा।

शाह की राजनीतिक सक्रियता का एक और पहलू है। वे स्वयं भविष्य में विधानसभा चुनाव में भाजपा की ओर से टिकट के दावेदार होने की इच्छा जाहिर कर चुके हैं। पार्टी संगठन और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से उनके संबंधों को लेकर भी राजनीतिक क्षेत्रों में चर्चा होती रही है। यदि भविष्य में वे विधानसभा चुनाव के लिए अपनी दावेदारी रखते हैं तो वर्तमान नगर परिषद चुनाव में उनकी सक्रिय भूमिका को उसी राजनीतिक पृष्ठभूमि में भी देखा जाएगा।

यहीं से एक बड़ा राजनीतिक सवाल खड़ा होता है—क्या किसी संभावित विधानसभा दावेदार को नगर परिषद के केवल दो वार्डों के चुनाव में इतनी सक्रियता दिखानी चाहिए थी?

यदि मुकेश शाह ने महेश सारस्वत और बबीता अरोड़ा के समर्थन में चुनाव प्रचार की जिम्मेदारी स्वीकार की है तो उनके लिए यह केवल दो वार्डों का चुनाव नहीं रह जाता। दोनों प्रत्याशियों की जीत या हार से उनकी व्यक्तिगत राजनीतिक छवि और प्रभाव को भी जोड़कर देखा जा सकता है। खासकर तब, जब यह चर्चा हो कि दोनों प्रत्याशियों के चयन में उनकी भूमिका रही है।

यदि वे अपने राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल करना चाहते थे तो क्या उन्हें पूरे शहर के स्तर पर व्यापक भूमिका नहीं निभानी चाहिए थी? यह सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि विधानसभा की राजनीति नगर परिषद के एक-दो वार्डों से कहीं अधिक व्यापक होती है। शहर के सभी वर्गों और सभी क्षेत्रों में अपनी स्वीकार्यता बनाना किसी भी संभावित विधानसभा दावेदार के लिए अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

दूसरी ओर, यह भी तर्क दिया जा सकता है कि स्थानीय स्तर पर किसी प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार करना राजनीतिक कार्यकर्ता और समर्थक के रूप में सामान्य गतिविधि है। हर चुनाव में नेता और प्रभावशाली लोग अपने पसंदीदा प्रत्याशियों के समर्थन में प्रचार करते हैं। इसलिए केवल दो वार्डों में सक्रिय होने को राजनीतिक गलती मानना भी उचित नहीं होगा।

लेकिन यदि मुकेश शाह की भविष्य की राजनीति विधानसभा चुनाव को केंद्र में रखकर आगे बढ़ती है, तो नगर परिषद के इन दोनों वार्डों का परिणाम उनके लिए एक राजनीतिक परीक्षा जरूर बन सकता है। दोनों प्रत्याशियों का प्रदर्शन जितना मजबूत होगा, उतना ही उनके समर्थक इसे शाह के प्रभाव की सफलता के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। वहीं यदि परिणाम उम्मीद के अनुरूप नहीं आते तो राजनीतिक विरोधियों को सवाल उठाने का अवसर मिल सकता है।

अंततः सवाल यह नहीं है कि मुकेश शाह को महेश सारस्वत और बबीता अरोड़ा के लिए प्रचार करना चाहिए था या नहीं। सवाल यह है कि यदि वे अपनी राजनीतिक पहचान को शहरव्यापी स्तर पर स्थापित करना चाहते हैं तो क्या उन्हें अपनी सक्रियता का दायरा केवल दो वार्डों तक सीमित रखना चाहिए था? नगर परिषद चुनाव का परिणाम आने के बाद यह तस्वीर कुछ हद तक स्पष्ट होगी कि दो वार्डों में शाह की सक्रियता ने कितना असर डाला और दोनों प्रत्याशियों का चुनावी प्रदर्शन कैसा रहा। इसके बाद ही यह आकलन संभव होगा कि यह रणनीति उनके लिए राजनीतिक रूप से कितनी लाभकारी साबित हुई।

श्रीगंगानगर नगर परिषद के लिए मतदान कल, चर्चाओं का बाजार गर्म

श्रीगंगानगर। श्रीगंगानगर नगर परिषद चुनाव के लिए शुक्रवार को मतदान होना है। मतदान को शांतिपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के लिए प्रशासन, पुलिस और चुनाव प्रक्रिया से जुड़ी अन्य एजेंसियों ने अपने-अपने स्तर पर तैयारियां पूरी कर ली हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी की ओर से भी चुनाव आयोग से प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुरूप व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देने के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक मार्गदर्शन दिया गया है।

मतदान की घड़ी नजदीक आने के साथ ही शहर में चुनावी चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया है। चाय की दुकानों से लेकर बाजारों और गली-मोहल्लों तक एक ही सवाल सुनाई दे रहा है—कौन जीत रहा है और कौन हार रहा है? प्रत्याशियों के समर्थक अपने-अपने हिसाब से जीत का गणित समझा रहे हैं, लेकिन मतदाता के मन की थाह लेना अभी आसान दिखाई नहीं दे रहा।

इस चुनाव की एक खास बात यह है कि पूर्व सभापति मैदान में नहीं हैं। सभापति का पद सामान्य वर्ग के लिए होने के बावजूद चुनाव को लेकर वैसा उत्साह दिखाई नहीं दिया, जिसकी सामान्यतः ऐसे चुनाव में अपेक्षा की जाती है। मैदान में उतरने वाले मजबूत दावेदारों की संख्या भी अपेक्षाकृत कम दिखाई दे रही है। राजनीतिक हलकों में इसका एक कारण चुनाव में हुई देरी को भी माना जा रहा है।

इस बार चुनावी तस्वीर पिछले चुनावों से कुछ अलग नजर आ रही है। शहर की राजनीति पर नजर रखने वालों के बीच चर्चा है कि ऐसा कोई एक चेहरा स्पष्ट रूप से सामने नहीं है, जिसके बारे में पहले से यह मान लिया जाए कि जीतने के बाद वह बड़ी संख्या में पार्षदों को अपने पक्ष में खड़ा करने की क्षमता रखता है। यही कारण है कि सभापति पद को लेकर चुनाव के बाद बनने वाले समीकरणों पर भी निगाहें टिकी हुई हैं।

शहर में पर्दे के पीछे चल रहे राजनीतिक समीकरणों को लेकर भी तरह-तरह की चर्चाएं हैं। कुछ प्रभावशाली लोगों और संपत्ति कारोबार से जुड़े समूहों द्वारा प्रत्याशियों को आर्थिक सहायता देने तथा टिकट वितरण को प्रभावित करने जैसी बातें राजनीतिक गलियारों में कही जा रही हैं। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है। इसलिए इन्हें फिलहाल चुनावी चर्चा और आरोपों के रूप में ही देखा जाना चाहिए।

एक अन्य दिलचस्प पहलू निर्दलीय प्रत्याशियों की मौजूदगी है। शहर में चर्चा है कि कुछ प्रभावशाली लोगों ने बड़ी संख्या में निर्दलीय उम्मीदवारों को मैदान में उतरने के लिए प्रोत्साहित किया है। यदि निर्दलीय प्रत्याशी प्रमुख दलों के परंपरागत मतों में सेंध लगाने में सफल होते हैं तो कई वार्डों में चुनावी गणित पूरी तरह बदल सकता है।

यही कारण है कि इस बार केवल राजनीतिक दलों के टिकट को जीत की गारंटी मानना आसान नहीं है। कुछ वार्डों में मुकाबला सीधा दिखाई दे सकता है, जबकि कई जगह त्रिकोणीय या बहुकोणीय संघर्ष प्रमुख दलों के प्रत्याशियों की मुश्किल बढ़ा सकता है। ऐसे मुकाबलों में मतों का मामूली बंटवारा भी परिणाम पलटने की क्षमता रखता है।

राजनीतिक जानकारों की निगाह विशेष रूप से इस बात पर है कि निर्दलीय प्रत्याशी कितने वार्डों में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। यदि किसी भी प्रमुख राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता है तो चुनाव परिणाम आने के बाद निर्दलीय पार्षदों का महत्व अचानक बढ़ सकता है। ऐसी स्थिति में सभापति पद की असली लड़ाई मतदान से अधिक परिणाम आने के बाद दिखाई दे सकती है।

फिलहाल दावे सभी के पास हैं और जीत का भरोसा भी हर खेमे में दिखाई दे रहा है, लेकिन अंतिम फैसला मतदाता के हाथ में है। शुक्रवार को मतपेटी में बंद होने वाला जनादेश ही तय करेगा कि किसके दावे में कितना दम था।

श्रीगंगानगर की चुनावी बिसात पर इस बार एक पुरानी कहावत भी खूब चर्चा में है—दो पक्षों की लड़ाई का लाभ कहीं तीसरा न उठा ले। निर्दलीयों की मजबूत मौजूदगी को देखते हुए यदि ऐसा हुआ तो नगर परिषद की सत्ता का गणित मतदान के बाद और भी दिलचस्प हो सकता है।

नवंबर के बाद ईरान के साथ चल रहा युद्ध समाप्त हो जायेगा : ट्रंप

काहिरा/वाशिंगटन/दुबई, 10 सितंबर। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि उन्हें उम्मीद है कि नवंबर में होने वाले अमेरिकी मध्यावधि चुनावों के बाद ईरान के साथ चल रहा युद्ध समाप्त हो जाएगा। साथ ही उन्होंने ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़े एक स्थल पर दोबारा हमला करने की चेतावनी भी दी है।

रॉयटर्स के अनुसार, ट्रंप का यह बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिका और ईरान के बीच संघर्ष के बीच समुद्री क्षेत्र में तनाव बढ़ गया है। दोनों पक्षों की ओर से जहाजों को निशाना बनाए जाने की घटनाओं ने क्षेत्रीय तनाव को और बढ़ा दिया है।

ट्रंप ने ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़े पिकैक्स माउंटेन स्थल पर फिर हमला किए जाने की संभावना का उल्लेख किया। यह स्थल ईरान के नतांज परमाणु परिसर के निकट स्थित है। हालांकि, ट्रंप के बयान को भविष्य के हमले की निश्चित घोषणा के बजाय चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है।

बुधवार को ईरान की ओर से होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास कई जहाजों को निशाना बनाए जाने की सूचना सामने आई। दूसरी ओर, अमेरिका ने ईरानी तेल टैंकरों के खिलाफ कार्रवाई की। समुद्री क्षेत्र में हुई ये घटनाएं संघर्ष शुरू होने के बाद से हमलों की सबसे बड़ी लहरों में शामिल बताई गई हैं।

इस बीच, सऊदी अरब में भी तनाव बढ़ गया। सऊदी नागरिक सुरक्षा अधिकारियों ने दक्षिण-पश्चिमी शहर खमीस मुशैत में 24 घंटे के भीतर चौथी बार आपात चेतावनी जारी की। यह घटनाक्रम यमन के ईरान समर्थित हूती संगठन और सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच बढ़ते तनाव के बीच सामने आया।

सऊदी अधिकारियों के अनुसार, दक्षिणी सऊदी अरब के कई इलाकों में मिसाइल और ड्रोन हमलों का खतरा बना हुआ है। अधिकारियों ने बाद में खमीस मुशैत में खतरा टलने की जानकारी दी।

रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन ने बताया कि हाल के हूती हमलों में दक्षिणी सऊदी अरब के चार शहरों में कम से कम 73 लोग घायल हुए हैं। सऊदी आधिकारिक समाचार एजेंसी के अनुसार, 9 सितंबर को खमीस मुशैत, अबहा और जाज़ान को बैलिस्टिक मिसाइलों और ड्रोन से निशाना बनाए जाने की जानकारी दी गई थी।

ईरान के साथ संघर्ष को लेकर ट्रंप का यह बयान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने युद्ध की संभावित समाप्ति को अमेरिकी मध्यावधि चुनाव के बाद की अवधि से जोड़ा है। हालांकि, युद्ध कब समाप्त होगा, इसकी कोई स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है और क्षेत्र में सैन्य तनाव अभी जारी है।

रॉयटर्स के अनुसार, आने वाले दिनों में ईरान, अमेरिका और क्षेत्रीय देशों के बीच सैन्य गतिविधियों तथा समुद्री मार्गों की स्थिति पर करीबी नजर रखी जा रही है।

संसद में बहुमत पर हर अमेरिकी को मिलेंगे लगभग पांच लाख रुपये : ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रिपब्लिकन पार्टी के लिए आगामी मध्यावधि चुनाव में समर्थन जुटाने के प्रयास के तहत बड़ा आर्थिक वादा किया है। उन्होंने कहा है कि यदि रिपब्लिकन पार्टी प्रतिनिधि सभा और सीनेट, दोनों पर अपना नियंत्रण बनाए रखती है, तो प्रत्येक वयस्क अमेरिकी नागरिक को 5,000 डॉलर का भुगतान किया जाएगा।

ट्रंप ने यह घोषणा 9 सितंबर को टेक्सास के डलास में आयोजित रिपब्लिकन पार्टी के मध्यावधि सम्मेलन में अपने संबोधन के दौरान की। उन्होंने प्रस्तावित भुगतान को ट्रंप लाभांश का नाम दिया और इसकी तुलना किसी सफल कंपनी द्वारा अपने शेयरधारकों को दिए जाने वाले नकद लाभांश से की। ट्रंप ने यह भी कहा कि इस राशि को अमेरिका के भीतर ही खर्च करना होगा।

हालांकि, ट्रंप ने यह स्पष्ट नहीं किया कि इस योजना के लिए धन कहां से आएगा और भुगतान किस व्यवस्था के तहत किया जाएगा। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, प्रस्ताव को लागू करने के लिए कांग्रेस की मंजूरी आवश्यक हो सकती है। राष्ट्रपति के पास अपने स्तर पर इतनी बड़ी राशि सीधे नागरिकों में वितरित करने का स्पष्ट वैधानिक अधिकार नहीं है।

अमेरिका में लगभग 24 करोड़ वयस्क नागरिकों को 5,000 डॉलर प्रति व्यक्ति दिए जाने पर कुल खर्च करीब 1.2 ट्रिलियन डॉलर बैठ सकता है। यदि अमेरिका में रहने वाले सभी वयस्कों को आधार माना जाए तो अनुमानित खर्च करीब 1.35 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकता है। इसलिए इस योजना की कुल लागत 1 ट्रिलियन डॉलर से काफी अधिक हो सकती है। योजना के वित्तपोषण को लेकर सबसे बड़ा सवाल यह है कि इतनी बड़ी राशि कहां से आएगी। उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने बाद में संकेत दिया कि अमीर लोगों को भुगतान से बाहर रखा जा सकता है और सीमा शुल्क से मिलने वाले राजस्व का इस्तेमाल संभावित स्रोत के रूप में किया जा सकता है। हालांकि, विशेषज्ञों के अनुसार मौजूदा सीमा शुल्क राजस्व अकेले 5,000 डॉलर के ऐसे व्यापक भुगतान के लिए पर्याप्त नहीं होगा।

यह प्रस्ताव ऐसे समय आया है जब अमेरिका पहले से ही बड़े बजट घाटे और भारी राष्ट्रीय ऋण का सामना कर रहा है। एसोसिएटेड प्रेस के अनुसार, अमेरिका का वार्षिक बजट घाटा लगभग 1.8 ट्रिलियन डॉलर और राष्ट्रीय ऋण 40 ट्रिलियन डॉलर से अधिक हो चुका है। आलोचकों का कहना है कि यदि इतनी बड़ी राशि अतिरिक्त उधारी से जुटाई गई तो इससे सरकारी वित्त पर और दबाव पड़ सकता है। अर्थशास्त्रियों ने इस तरह के बड़े प्रत्यक्ष भुगतान के संभावित महंगाई प्रभाव को लेकर भी सवाल उठाए हैं। यदि करोड़ों लोगों को एक साथ बड़ी राशि मिलती है और उसका बड़ा हिस्सा उपभोग में खर्च होता है, तो वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ सकती है। इससे महंगाई पर अतिरिक्त दबाव पड़ने की आशंका जताई जा रही है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि 5,000 डॉलर का भुगतान अभी कोई लागू सरकारी योजना नहीं है। यह राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा चुनाव से पहले किया गया राजनीतिक वादा है। इसके लिए पात्रता, भुगतान की तारीख, वित्तीय स्रोत और कानूनी प्रक्रिया जैसे महत्वपूर्ण विवरण अभी स्पष्ट नहीं किए गए हैं। प्रस्ताव को वास्तविक सरकारी भुगतान में बदलने के लिए विधायी प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

ट्रंप का यह ऐलान नवंबर में होने वाले मध्यावधि चुनाव से पहले आया है। रिपब्लिकन पार्टी प्रतिनिधि सभा और सीनेट में अपना नियंत्रण बनाए रखने की कोशिश कर रही है। ट्रंप ने अपने भाषण में मतदाताओं से अपील की कि वे मध्यावधि चुनाव को इस तरह देखें जैसे वह स्वयं चुनाव में उम्मीदवार हों। ट्रंप ने 5,000 डॉलर के ट्रंप लाभांश का वादा किया है, लेकिन अमेरिकी नागरिकों को अभी कोई भुगतान स्वीकृत या वितरित नहीं किया जा रहा है। योजना की अनुमानित लागत 1 ट्रिलियन डॉलर से अधिक हो सकती है और इसके वित्तपोषण तथा कानूनी प्रक्रिया पर अभी कई सवाल अनुत्तरित हैं।

एनसीबी की हिरासत से फरार तस्कर जालंधर से मिला

जम्मू। जम्मू स्थित स्वापक नियंत्रण ब्यूरो (नारकोटिक्स कंट्रोल बोर्ड/एनसीबी) की हिरासत से फरार हुए मादक पदार्थ तस्करी के आरोपी आकिब बशीर को तीन दिन की तलाश के बाद पंजाब के जालंधर से फिर गिरफ्तार कर लिया गया। यह कार्रवाई स्वापक नियंत्रण ब्यूरो, जम्मू-कश्मीर पुलिस और पंजाब पुलिस के संयुक्त अभियान में की गई।

अधिकारियों के अनुसार, पुलवामा जिले के काकापोरा निवासी आकिब बशीर को तीन सितंबर को सांबा जिले में एक यात्री बस से गिरफ्तार किया गया था। उसके पास से 522 ग्राम हेरोइन बरामद होने की बात सामने आई थी। इसके बाद उसे जम्मू के नरवाल क्षेत्र स्थित स्वापक नियंत्रण ब्यूरो की हिरासत में रखा गया था। बशीर छह और सात सितंबर की दरम्यानी रात हिरासत से फरार हो गया था। उसके फरार होने के बाद जम्मू-कश्मीर और पंजाब में उसकी तलाश के लिए व्यापक अभियान चलाया गया।

स्वापक नियंत्रण ब्यूरो के अनुसार, फरारी के बाद बशीर पठानकोट के रास्ते जालंधर पहुंचा। इससे पहले वह नरवाल फल मंडी के पास एक वन क्षेत्र में छिपा था। पहचान छिपाने के लिए उसने दाढ़ी-मूंछ साफ कर ली, कपड़े बदल लिए और अपना हुलिया बदलने की कोशिश की। इसके बाद उसने जालंधर में अपने संपर्कों के माध्यम से कथित तौर पर शरण ली।

अधिकारियों के मुताबिक, खुफिया सूचनाओं और जमीनी स्तर पर की गई निगरानी के आधार पर जांच दलों ने उसका ठिकाना पता लगाया। बशीर को जालंधर में उस समय पकड़ा गया, जब वह दिल्ली या किसी अन्य राज्य की ओर जाने की तैयारी कर रहा था।

स्वापक नियंत्रण ब्यूरो के अनुसार, यह कार्रवाई जम्मू संभाग में चलाए जा रहे एक महीने लंबे मादक पदार्थ विरोधी अभियान का हिस्सा है। जांच एजेंसी ने इस अभियान के दौरान जम्मू-कश्मीर में हेरोइन पहुंचाने वाले दो कथित मार्गों का पता लगाया है। इनमें पाकिस्तान से उरी क्षेत्र के रास्ते और पंजाब के माध्यम से आने वाला मार्ग शामिल है।

अधिकारियों के अनुसार, पिछले एक महीने में की गई चार कार्रवाइयों तथा पंजाब में हुई संबंधित बरामदगी को मिलाकर कुल 6.920 किलोग्राम हेरोइन जब्त की गई है और छह आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

बशीर के हिरासत से फरार होने की परिस्थितियों की भी जांच की जा रही है। जांच एजेंसियां यह पता लगाने का प्रयास कर रही हैं कि उसे फरारी के दौरान किन लोगों ने कथित रूप से शरण या सहायता उपलब्ध कराई।

स्वापक नियंत्रण ब्यूरो केंद्रीय गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करने वाली प्रमुख मादक पदार्थ कानून प्रवर्तन और समन्वय एजेंसी है।

होर्मूज को अब ट्रंप जलडमरूमध्य कहा जायेगा : राष्ट्रपति डोनाल्ड

टेक्सास, 10 सितंबर (वार्ता) अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को कहा कि अमेरिका अब होर्मुज जलडमरूमध्य को ट्रंप जलडमरूमध्य कहेगा क्योंकि अमेरिका ईरान के खिलाफ इस युद्ध को जीत रहा है। श्री ट्रंप ने कहा, ईरान के खिलाफ युद्ध में हमारी जीत होते ही तेल के दाम नीचे आएंगे। हम इसे जीतेंगे, बल्कि जीत ही रहे हैं। होर्मुज जलडमरूमध्य पर हमारा नियंत्रण है। मुझे लगता है कि हमें इसे ट्रंप जलडमरूमध्य बुलाना चाहिए। मुझे इससे कुछ तो मिलना चाहिए। उन्होंने कहा, देवियों और सज्जनों, मैं एक ऐलान करना चाहता हूं। हम उसे ट्रंप जलडमरूमध्य कहेंगे। मुझे यकीन है कि ईरानी नेताओं को यह जानकर बहुत खुशी होगी। श्री ट्रंप ने कहा कि ईरान धराशाई हो रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि अमेरिका ईरान के नतांज़ परमाणु ठिकाने वाले पिकएक्स पहाड़ पर हमला कर सकता है, क्योंकि वहां कुछ हलचल देखने को मिली है।उन्होंने कहा कि अमेरिका क्षेत्र में हर हलचल से वाकिफ है। उन्होंने कहा, हम जानते हैं कि क्या हो रहा है। मैं ईरान को सलाह दूंगा कि वे कुछ कोशिश न करें, क्योंकि फिर हमें उन पर करारा प्रहार करना पड़ेगा। हमारे पास कोई और विकल्प नहीं है।

संपादकीय | पीजी -दड़बे की हकीकत कब होगी बेनकाब?

देश की राजधानी दिल्ली के सत्य निकेतन इलाके में एक पीजी होस्टल की जर्जर इमारत के अचानक ढह जाने और उसमें पांच छात्रों सहित सात लोगों की मौत की घटना ने न सिर्फ अभिभावकों को हिला दिया है, बल्कि इसने दिल्ली में सुरक्षा इंतजामों, बिल्डिंग परमिशन व जांच में भारी भ्रष्टाचार तथा पीजी के नाम पर चल रहे दड़बों की हकीकत को भी बेनकाब कर दिया है। असमय मौत का शिकार होने वाले दो बच्चे मप्र के भी हैं। जिन मां बाप ने अपने बच्चों को इस भीषण हादसे में खो दिया है, उनके दुख की कोई भरपाई नहीं कर सकता। इन बच्चों का दोष केवल इतना था कि वो दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैंपस के कॉलेजों के विद्यार्थी थे और कॉलेज के पास होने की वजह से अमानवीय परिस्थिति के बावजूद इन पीजी (पेइंग गेस्ट) में रह रहे थे। इन पीजी की वास्तविकता की जो तस्वीर अब उजागर हो रही है, वह हिला देने वाली है। छोटा सा कमरा, जिसमें रोशनी, पानी जैसी सुविधाएं तक नहीं, में किसी तरह बच्चे रह रहे हैं और इनके बदले भी मोटी फीस वसूली जा रही है।

लोग देने को मजबूर हैं, क्योंकि दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कॉलेजों में पर्याप्त होस्टल सुविधा ही नहीं है। जिसका नाजायज लाभ ये पीजी मालिक भरपूर उठा रहे हैं। सरकारी तंत्र और नेता इतने भ्रष्ट हैं कि सबने इसको लेकर आंखें मूंदी हुई हैं। मीडिया में भी इन बातों का पहले कभी जिक्र ज्यादा इसलिए नहीं हुआ, क्योंकि इन पीजी में रहने वाले बच्चे दिल्ली से बाहर के होते हैं, उनका लोकल कांटेक्ट नहीं होता। दूसरे पीजी मालिक इन्हें भावनात्मक रूप

से भी दबाते रहते हैं, जिसकी वजह से वो मुंह नहीं खोल पाते। सत्य निकेतन इलाके में जो इमारत गिरी, उसके पीछे वजह भी अवैध तरीके से बेसमेंट में निर्माण कार्य कराना था, जिसकी वजह से आधार के पिलर ही धंस गए। इस पूरे मामले में कई सवाल उठ रहे है। जैसे कि क्या मरम्मत शुरू करने से पहले इमारत की सुरक्षा जांच हुई थी? दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का कहना है कि बेसमेंट 1 हमें खुदाई का काम चल रहा था और इसी दौरान एक पिलर खिसक गया, जिसके बाद पूरी इमारत गिर गई। स्थानीय लोगों ने भी बताया कि बेसमेंट में पानी जमा होता था और वहां काम चल रहा था। मरम्मत शुरू करने से पहले क्या किसी क़ाबिल इंजीनियर से उसकी स्ट्रक्चरल जांच कराई गई थी? दूसरा, क्या इमारत का निर्माण मंजूर नक्शे के मुताबिक हुआ था? इस मामले में दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) सवालों के घेरे में है। तीसरे, क्या इस इमारत को पीजी के तौर पर चलाने की अनुमति थी? चौथा क्या इमारत में आपात स्थिति से बचने के पर्याप्त इंतज़ाम थे? पांचवां अगर इलाके में पहले से ऐसी समस्याएं थीं, तो एमसीडी को पता क्यों नहीं चला?

यदि वहां निर्माण नियमों का उल्लंघन हो रहा तो उसे समय रहते क्यों नहीं रोका गया? अब हादसे के बाद कहा जा रहा है कि दिल्ली की सभी इमारतों का सुरक्षा ऑडिट होगा। लेकिन यह ऑडिट भी कैसा होगा, यह समझा जा सकता है। क्योंकि एमसीडी ने इस साल की शुरूआत में किए एक सर्वे में 27 लाख 84 हजार 286 इमारतों का सर्वे किया गया, जिनमें से केवल 19 खतरनाक पाई गई थीं। इस मामले में तात्कालिक खानापूर्ति ज्यादा होती दिखाई दे रही है। हालांकि अदालत भी इस घटना को लेकर सख्त है। इस बीच पुलिस ने बिल्डिंग मालिक सहित तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया है।

विविधता का दावा करने वाले देश में क्यों असुरक्षित हैं पूर्वोत्तर के नागरिक?

भारत की विविधता को उसकी सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक माना जाता रहा है। अलग-अलग भाषा, संस्कृति, खान-पान और जीवनशैली के बावजूद देश की एकता कायम है। मगर इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों को आज भी देश के कई हिस्सों में भेदभाव, उपेक्षा और यहां तक कि हिंसा का सामना करना पड़ता है। उनकी अलग भौगोलिक और सांस्कृतिक पहचान को लेकर बने पूर्वाग्रह और गलत धारणाएं इस समस्या को और गंभीर बनाती हैं। दिल्ली में मणिपुरी संगीतकार

चोंगथाम विक्रम सिंह की हत्या को भी इसी धारणा से जोड़कर देखा जा रहा है। इससे एक बार फिर यह सवाल उठ रहा है कि क्या दिल्ली जैसे महानगरों की चकाचौंध में नागरिकों की सुरक्षा का मसला हाशिये पर चला गया है। निश्चित तौर पर यह सरकार और कानून-व्यवस्था की नाकामी का भी प्रश्न है, क्योंकि देश की राजधानी होने के बावजूद यहां बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था के दावे अक्सर खोखले साबित होते हैं। गौरतलब है कि दिल्ली की सनलाइट कालोनी में बीते रविवार की रात को मणिपुरी संगीतकार विक्रम सिंह ने अपने घर के पास कुछ लोगों को शराब पीकर हंगामा और शोर मचाने से रोकने की कोशिश की थी। इसी से गुस्साए लोगों ने उनसे मारपीट की, जिससे उनकी मौत हो गई। यों हर अपराध कानून-व्यवस्था की विफलता का सूचक है, लेकिन जब कोई पीड़ित देश के पूर्वोत्तर राज्य से हो, तब ऐसी घटना को एक व्यापक सामाजिक संदर्भ में देखा जाता है। पूर्वोत्तर राज्यों के लोग अक्सर यह शिकायत करते रहे हैं कि दिल्ली सहित देश के अनेक शहरों में उन्हें केवल शक्ल-सूरत, भाषा, खान-पान और जीवन-शैली के कारण पूर्वाग्रहों से भरी दृष्टि से देखा जाता है। इस क्षेत्र के लोगों पर किसी दूसरे प्रदेश में नस्लीय दुराग्रहों की वजह से हमले या उनकी हत्या के मामले भी अक्सर सामने आते रहे हैं। भेदभाव की यह प्रवृत्ति न केवल ऐसे पूर्वाग्रह पालने वालों की सोच पर सवाल उठाती है, बल्कि यह राष्ट्रीय एकता की भावना को भी चोट पहुंचाती है। इसलिए हत्या की इस वारदात की जांच निष्पक्ष तरीके से की जानी चाहिए और इसमें यह भी देखना जरूरी है कि क्या इसके पीछे किसी तरह का भेदभाव या इससे उपजी पूर्वाग्रह की मानसिकता तो नहीं थी !

आज का कार्टून

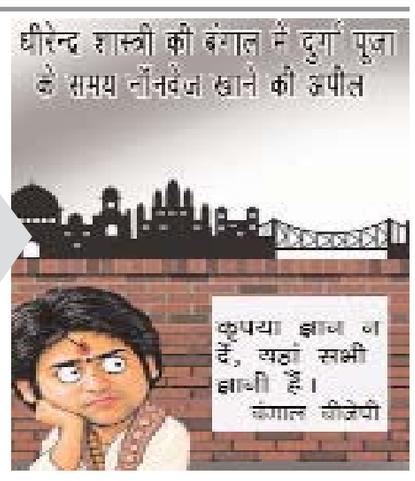

'मार से सुधार' की मानसिकता कब खत्म होगी

भारत में शिक्षा का निजीकरण बढ़ा है। स्कूलों की फीस, सुविधाएं और परिणामों की चर्चा खूब होती है। मगर बच्चे के अधिकारों की चर्चा अपेक्षाकृत कम होती है। अभिभावक फीस देते हैं, लेकिन बच्चा स्कूल में कोई 'ग्राहक' नहीं है। वह भी अधिकार संपन्न नागरिक है। उसकी गरिमा है। उसकी आवाज है। उसका मानसिक स्वास्थ्य है। सुरक्षा का अधिकार है। विद्यालय का दायित्व केवल परीक्षा में अच्छे अंक दिलाना नहीं है। उसका दायित्व ऐसा वातावरण बनाना है जिसमें बच्चा प्रश्न पूछ सके, गलतियों से सीख सके और अपनी बात कह सके। जिस कक्षा में गलती करने से बच्चा डरता है, वहां सीखने की प्रक्रिया आधी मर चुकी होती है। शिक्षा का सबसे बुनियादी पैमाना यह होना चाहिए कि क्या हमारा बच्चा सुबह स्कूल जाते समय खुश है या नहीं? क्या गृहकार्य की एक कापी बच्चे के जीवन से बड़ी हो सकती है? ये कुछ सवाल हैं जिनका हमें सामना करना होगा।

श्रवण कुमार

अनुशासन के नाम पर हिंसा, मानसिक उत्पीड़न और विद्यालयों की जवाबदेही पर अब यह सवाल जरूरी है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था बच्चों को आखिर क्या दे रही है- ज्ञान या भय? हाल ही में विशाखापत्तनम के एक स्कूल में एक बच्चे की मौत ने इस सवाल को बेहद कड़वी सच्चाई में बदल दिया है। खबरों के अनुसार, बच्चे के परिवार ने आरोप लगाया कि गृहकार्य पूरा न करने पर शिक्षक ने उसे थप्पड़ मारा। सामने आए वीडियो में शिक्षक बच्चे को डांटते और थप्पड़ मारते हुए दिख रहा है। इस घटना के बाद बच्चा कक्षा में गिर पड़ा और अस्पताल ले जाने पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

आरोपी शिक्षक को गिरफ्तार जरूर किया गया, लेकिन बच्चे की मृत्यु का अंतिम सच जांच और पोस्टमार्टम के निष्कर्षों से ही तय होगा। सवाल है कि क्या किसी बच्चे को शिक्षा देने के नाम पर थप्पड़ मारना चाहिए?

इसके बाद दिल्ली में ग्यारह वर्षीय एक छात्रा से जुड़ी घटना ने भी स्कूलों में बच्चों के साथ व्यवहार पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। परिजनों ने आरोप लगाया कि स्कूल में शिक्षक द्वारा प्रताड़ित किए जाने के बाद बच्ची की तबीयत बिगड़ी और बाद में उसकी मौत हो गई। हालांकि पुलिस और उपलब्ध जानकारी के अनुसार कहा गया कि बच्ची को पहले से ही गंभीर बीमारी थी। सत्य तो जांच के बाद पता चलेगा, लेकिन स्कूलों में बच्चों की शारीरिक और मानसिक पीड़ा को पर्याप्त गंभीरता से लिया जाना जरूरी है।

भारत में बच्चों को शारीरिक दंड से बचाने के लिए कानून मौजूद है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा-17 बच्चे को शारीरिक सजा और मानसिक उत्पीड़न स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित करती है। इसी कानून में विद्यालयों के मानकों, शिक्षकों के कर्तव्यों और शिकायतों के निवारण से संबंधित प्रावधान भी हैं। इसके बावजूद स्कूलों में 'मार से सुधार' की संस्कृति अभी तक पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।

हमारे समाज में अनुशासन और सजा को लंबे समय तक एक-दूसरे का पर्याय समझा गया। 'हमारे जमाने में मास्टर मारता था', 'एक थप्पड़ से बच्चा सीधा हो जाता है', 'बच्चे में थोड़ा डर जरूरी है', ये वाक्य सामान्य बातचीत में आज भी सुनाई देते हैं। मगर आधुनिक बाल मनोविज्ञान और बाल अधिकार की अवधारणा ने इस सोच को चुनौती दी है।

बच्चे की भावनात्मक संरचना अलग है। शिक्षक की डांट उसके लिए उतनी ही बड़ी घटना हो सकती है, जितनी किसी वयस्क के लिए सार्वजनिक अपमान। शिक्षक का एक थप्पड़ शायद उसके लिए पांच मिनट की घटना हो, लेकिन बच्चे के लिए वह महीनों तक चलने वाला भय बन सकता है।

नवंबर, 2025 में महाराष्ट्र में छठी कक्षा की एक छात्रा की मौत से जुड़ा मामला भी देश का ध्यान खींच चुका है। उस घटना में परिवार ने आरोप लगाया था कि स्कूल देर से पहुंचने पर बच्ची को सौ बार उठक-बैठक करने की सजा दी गई। परिवार ने दावा किया कि इसके बाद उसकी तबीयत बिगड़ी और इलाज के दौरान

उसकी मौत हो गई। इस मामले में शिक्षक की गिरफ्तारी हुई। यहां अहम प्रश्न यह है कि स्कूल में किसी बच्चे को सजा देने के लिए शारीरिक प्रताड़ना का इस्तेमाल आखिर किस शिक्षा व्यवस्था का हिस्सा है? देर से आने की गलती का समाधान संवाद हो सकता है।

समय-प्रबंधन सिखाया जा सकता है। अभिभावकों से संवाद किया जा सकता है, लेकिन शरीर को सजा देने का औजार बना देना किस प्रकार का अनुशासन है? चिकित्सकों और मनोवैज्ञानिकों ने भी चेताया है कि बच्चों से अचानक और असामान्य रूप से कठोर शारीरिक गतिविधि कराना जोखिमपूर्ण हो सकता है।

अगस्त, 2024 में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने एक छात्रा की आत्महत्या से जुड़े मामले में शिक्षक की याचिका खारिज करते हुए स्कूल में शारीरिक हिंसा पर महत्त्वपूर्ण टिप्पणी की थी। अदालत ने कहा कि शिक्षा या अनुशासन के नाम पर बच्चे के साथ शारीरिक हिंसा क्रूरता है और बच्चे को संवेदनशीलता के साथ विकसित किया जाना चाहिए। यह टिप्पणी केवल किसी एक मामले के संदर्भ में नहीं देखी जानी चाहिए। यह उस बुनियादी सिद्धांत की पुनर्पुष्टि है कि बच्चे पर शिक्षक का अधिकार उसकी गरिमा से ऊपर नहीं हो सकता।

शिक्षक को कक्षा में अनुशासन लाने का अधिकार है, लेकिन बच्चे की गरिमा छीनने का अधिकार नहीं। विद्यालय को व्यवस्था बनाए रखने की आवश्यकता है, लेकिन भय पैदा करके व्यवस्था कायम करना शिक्षा नहीं है। स्कूलों में हिंसा का अर्थ केवल शारीरिक चोट तक सीमित नहीं है। कक्षा में बच्चे को सबके सामने अपमानित करना, उसकी तुलना दूसरे बच्चों से करना, जाति या सामाजिक पृष्ठभूमि पर टिप्पणी करना, लगातार उसे 'नालायक' कहना, पूरी कक्षा के सामने खड़ा कर देना, धमकाना या अलग-थलग करना भी बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की स्कूल सुरक्षा संबंधी सामग्री भी सकारात्मक व्यवहार, बच्चों की भागीदारी, समस्या के मूल कारण को समझने और सजा के स्थान पर सकारात्मक अनुशासन पर जोर देती है। आयोग ने स्कूल में बच्चों की सुरक्षा के लिए नियमावली और विस्तृत दिशानिर्देश उपलब्ध कराए हैं।

हम शिक्षक से विषय का विशेषज्ञ होने की अपेक्षा करते हैं। गणित का शिक्षक गणित जानता हो, विज्ञान शिक्षक विज्ञान जानता हो, भाषा शिक्षक भाषा का अच्छा ज्ञान रखता हो, यह स्वाभाविक है। लेकिन क्या हर शिक्षक को यह पता है कि छह वर्ष के बच्चे का व्यवहार कैसा होता है? क्या उसे पता है कि किसी बच्चे के लगातार गृहकार्य न करने के पीछे पारिवारिक तनाव, सीखने में कठिनाई, ध्यान संबंधी समस्या या कोई भावनात्मक वजह हो सकती है? क्या शिक्षक को यह प्रशिक्षण दिया जाता है कि गुस्से में प्रतिक्रिया देने के बजाय कक्षा को कैसे संभालना है

यही वह क्षेत्र है जहां शिक्षक प्रशिक्षण की गंभीरता सामने आती है। कक्षा प्रबंधन हिंसा से नहीं, कौशल से आता है। बच्चों को डराना आसान है। उन्हें समझना कठिन है। अच्छा शिक्षक वही है जो कठिन रास्ता चुनता है। हर घटना के बाद केवल शिक्षक को निलंबित कर देना सबसे आसान तरीका है। इससे तत्काल जन आक्रोश शांत हो सकता है, लेकिन समस्या समाप्त नहीं होती।

भारत में शिक्षा का निजीकरण बढ़ा है। स्कूलों की फीस, सुविधाएं और परिणामों की चर्चा खूब होती है। मगर बच्चे के अधिकारों की चर्चा अपेक्षाकृत कम होती है। अभिभावक फीस देते हैं, लेकिन बच्चा स्कूल में कोई 'ग्राहक' नहीं है। वह भी अधिकार संपन्न नागरिक है। उसकी गरिमा है। उसकी आवाज है। उसका मानसिक स्वास्थ्य है। सुरक्षा का अधिकार है। विद्यालय का दायित्व केवल परीक्षा में अच्छे अंक दिलाना नहीं है। उसका दायित्व ऐसा वातावरण बनाना है जिसमें बच्चा प्रश्न पूछ सके, गलतियों से सीख सके और अपनी बात कह सके।

जिस कक्षा में गलती करने से बच्चा डरता है, वहां सीखने की प्रक्रिया आधी मर चुकी होती है। शिक्षा का सबसे बुनियादी पैमाना यह होना चाहिए कि क्या हमारा बच्चा सुबह स्कूल जाते समय खुश है या नहीं? क्या गृहकार्य की एक कापी बच्चे के जीवन से बड़ी हो सकती है? ये कुछ सवाल हैं जिनका हमें सामना करना होगा।

स्कूली किताबों ने खोली जिम्मेदारियों की नई राह

अगर शिक्षा बच्चों को रूढ़िवादी लैंगिक भूमिकाओं पर प्रश्न करना नहीं सिखाएगी, तो समाज में वास्तविक बदलाव कठिन होगा। केवल महिलाओं का आर्थिक रूप से सक्रिय होना पर्याप्त नहीं है। परिवार और समाज की सोच तथा जिम्मेदारियों के बंटवारे में भी परिवर्तन आवश्यक है। अन्यथा महिलाएं बाहर काम करने के बाद भी घर के काम का पूरा बोझ उठाती रहेंगी और समानता का विचार व्यवहार में नहीं उतर पाएगा। आजादी के इतने वर्षों बाद भी अगर हम बच्चों को उन्हीं रूढ़िवादी लैंगिक भूमिकाओं, असमानताओं और लैंगिक असंवेदनशीलता के बीच बड़ा होने देंगे, तो समाज न तो प्रगतिशील बन पाएगा और न ही वैचारिक रूप से स्वतंत्र।

वंदना तिवारी

हमारे समाज में लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि घर का काम मुख्य रूप से महिलाओं की जिम्मेदारी है और बाहर जाकर कमाना पुरुषों का दायित्व। मगर बदलते समय के साथ परिवार की यह तस्वीर तेजी से बदल रही है। जब कक्षा छह के सामाजिक विज्ञान के एक पाठ में बच्चों से पूछा गया कि 'क्या पिता खाना बना सकते हैं' और 'क्या मां घर के बाहर काम कर सकती हैं', तो चर्चा केवल एक पाठ तक सीमित नहीं रही।

बातचीत बच्चों को परिवार, जिम्मेदारी और साझेदारी के नए अर्थ समझाने लगी। दरअसल, बच्चे परिवार और समाज को देखकर ही स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं को समझना शुरू करते हैं। अगर वे बचपन से यह देखते और सुनते हैं कि घर का काम केवल महिलाओं की जिम्मेदारी है और बाहर जाकर कमाना केवल पुरुषों का दायित्व है, तो यही धारणाएं उनके भीतर सामान्य और स्वाभाविक मान्यता के रूप में स्थापित हो जाती हैं। बाद में यही धारणाएं लैंगिक असमानता, महिलाओं पर दोहरे बोझ और घर के काम के असमान बंटवारे को बनाए रखती हैं। आज के बदलते परिवेश में जब परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी साझा है, तो घरेलू जिम्मेदारियां भी साझा क्यों नहीं होनी चाहिए? खाना बनाना, बच्चों की देखभाल करना, सफाई करना या परिवार के अन्य सदस्यों की आवश्यकताओं का ध्यान रखना केवल स्त्री का काम नहीं माना जा सकता। पिता खाना बना सकते हैं और मां घर के बाहर काम कर सकती हैं। परिवार की भूमिकाएं स्थिर नहीं होतीं, बल्कि सहयोग, संवेदनशीलता और परिस्थितियों के अनुसार साझा की जा सकती हैं। शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तक की जानकारी देने का माध्यम नहीं है। वह बच्चों को समाज में उपस्थित असमानताओं को पहचानने, उन पर प्रश्न करने और अधिक न्यायपूर्ण संबंधों की कल्पना करने का अवसर भी देती है। विद्यालय में बच्चों को लैंगिक संवेदनशीलता के बारे में पढ़ाना इसलिए जरूरी है, ताकि वे समझ सकें कि किसी कार्य को केवल स्त्री या पुरुष से जोड़ना उचित नहीं है। जब बच्चों को यह समझाया जाएगा कि पारिवारिक भूमिकाओं में सहयोग और लचीलापन एक संतुलित और सहयोगी वातावरण का निर्माण करते हैं, तो उनकी धारणा भी अलग जमीन पर विकसित होगी। भूमिका-अभिनय यानी रोल-प्ले सामाजिक विज्ञान के

लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हुआ है, क्योंकि इससे बच्चों में सहानुभूति और समझ का विकास संभव हो पाता है।

जब बच्चे विभिन्न पारिवारिक भूमिकाएं निभाते हैं, तो उन्हें विविध दृष्टिकोणों की समझ प्राप्त होती है और वे पारिवारिक अंतर्क्रियाओं की जटिलताओं की सराहना करते हैं। यह अनुभवात्मक अधिगम मानव व्यवहार और सामाजिक मानदंडों को समझने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण साबित होता है, जो सामाजिक विज्ञान शिक्षा के केंद्रीय तत्त्व है। भूमिका-अभिनय के माध्यम से विद्यार्थी न केवल परिवार के भीतर विशिष्ट भूमिकाओं के बारे में सीखते हैं, बल्कि वे अपने निर्धारित परिदृश्यों की चुनौतियों का सामना करते हुए आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान कौशल भी विकसित करते हैं। लैंगिक संवेदनशीलता का पाठ पढ़ाने का अर्थ केवल यह बताना नहीं है कि महिलाएं भी बाहर काम कर सकती हैं। इसका अर्थ यह समझाना भी है कि आर्थिक रूप से योगदान देने वाली महिला से घर की पूरी जिम्मेदारी निभाने की अपेक्षा करना असमानता है। इसी प्रकार पुरुषों को घरेलू काम से दूर रखना भी उन्हें देखभाल, संवेदनशीलता और पारिवारिक साझेदारी के अनुभव से वंचित करता है। साझा जिम्मेदारियां स्त्री और पुरुष दोनों को रूढ़िवादी भूमिकाओं की सीमाओं से बाहर आने का अवसर देती हैं। बच्चों के भीतर नए प्रकार के सामाजिक बदलावों के प्रति लचीलापन विकसित करना और उन्हें बदलते परिवेश से अवगत कराना बेहद जरूरी है। इससे वे केवल अपने परिवार की भूमिकाओं को अलग दृष्टि से नहीं देखते, बल्कि समानता, सहयोग और संवेदनशीलता जैसे मूल्यों को अपने जीवन से जोड़कर समझते हैं। यही समझ आगे चलकर उनके व्यक्तिगत संबंधों, कार्यस्थल और सामाजिक व्यवहार को अधिक न्यायपूर्ण बना सकती है। यह दृष्टिकोण न केवल पारिवारिक भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की गहरी समझ विकसित करता है, बल्कि वास्तविक जीवन के मुद्दों पर गतिशील और रोचक तरीके से आलोचनात्मक चिंतन को भी प्रोत्साहित करता है। इस तरह के सामाजिक प्रशिक्षण पारिवारिक गतिशीलता की जटिलताओं तथा साझा जिम्मेदारियों के महत्त्व को सिखाने में भूमिका-अभिनय की उपयोगिता को उजागर करते हैं, जो एक संतुलित पारिवारिक जीवन के निर्माण में योगदान देती हैं। अगर शिक्षा बच्चों को रूढ़िवादी लैंगिक भूमिकाओं पर प्रश्न करना नहीं सिखाएगी, तो समाज में वास्तविक बदलाव कठिन होगा। केवल महिलाओं का आर्थिक रूप से सक्रिय होना पर्याप्त नहीं है। परिवार और समाज की सोच तथा जिम्मेदारियों के बंटवारे में भी परिवर्तन आवश्यक है। अन्यथा महिलाएं बाहर काम करने के बाद भी घर के काम का पूरा बोझ उठाती रहेंगी और समानता का विचार व्यवहार में नहीं उतर पाएगा। आजादी के इतने वर्षों बाद भी अगर हम बच्चों को उन्हीं रूढ़िवादी लैंगिक भूमिकाओं, असमानताओं और लैंगिक असंवेदनशीलता के बीच बड़ा होने देंगे, तो समाज न तो प्रगतिशील बन पाएगा और न ही वैचारिक रूप से स्वतंत्र। बच्चों को शिक्षा के माध्यम से बदलती पारिवारिक भूमिकाओं, साझा जिम्मेदारियों और लैंगिक समानता से परिचित कराना बेहद जरूरी है।

कॉस्मेटोलॉजी के फील्ड में संवारें अपना कॅरियर...

अगर आप भी न सिर्फ खुद को बल्कि दूसरों की भी पर्सनालिटी को निखानने और उनको खूबसूरत बनाने में दिलचस्पी रखते हैं, तो आप कॉस्मेटोलॉजी के क्षेत्र में अपना कॅरियर बना सकते हैं। वर्तमान समय में कॉस्मेटोलॉजी इंडस्ट्री तेजी से ग्रोथ कर रहा है।

आज के समय में हर कोई स्टाइलिश दिखना चाहता है। यही कारण है कि वर्तमान समय में न सिर्फ शहर बल्कि गांव तक में ब्यूटी सैलून, स्पा और कॉस्मेटिक क्लिनीक्स में दिन पर दिन इजाफा होता जा रहा है। जिसकी वजह से तेजी से कॉस्मेटोलॉजी इंडस्ट्री में ग्रोथ आ रहा है। आपको बता दें कि ब्यूटी एंड पर्सनल केयर मार्केट के रिपोर्ट के मुताबिक साल 2027 तक भारत की कॉस्मेटोलॉजी इंडस्ट्री की वर्थ 33.3 मिलियन यूएस डॉलर पहुंच जाएगी। ऐसे में अगर आप भी न सिर्फ खुद को बल्कि दूसरों की भी पर्सनालिटी को निखानने और उनको खूबसूरत बनाने में दिलचस्पी रखते हैं, तो आप कॉस्मेटोलॉजी के क्षेत्र में अपना कॅरियर बना सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि आप कॉस्मेटोलॉजी में किस तरह से अपना कॅरियर बना सकते हैं।

कॉस्मेटोलॉजी के लिए योग्यता

कॉस्मेटोलॉजी में ग्रेजुएशन करने के लिए जरूरी है कि आपने मान्यता प्राप्त बोर्ड से 12वीं पास की है। किसी भी स्ट्रीम के छात्र कॉस्मेटोलॉजी में अपना कॅरियर बना सकते हैं। इस कोर्स को करने में 10 हजार से लेकर 2 लाख रुपए तक का खर्च आएगा। साथ ही आप इस कोर्स को ऑनलाइन और ऑफलाइन कर सकते हैं। कॉस्मेटोलॉजी में आप डिप्लोमा, सर्टिफिकेट, पीजी डिप्लोमा और पोस्ट ग्रेजुएट कर सकते हैं।

कॉस्मेटोलॉजी का स्कोप

इस क्षेत्र में पढ़ाई करने वाले लोग कॉस्मेटिक सर्जन, मेकअप आर्टिस्ट, हेयर स्टाइलिस्ट, नेल आर्टिस्ट, मेकअप आर्टिस्ट, ब्यूटी कॉपीराइटर, ब्यूटी ब्लॉगर, इमेज स्टाइलिस्ट, हेयर ड्रेसर और इलेक्ट्रोलॉजिस्ट जैसे प्रोफाइल पर काम कर सकते हैं। इस क्षेत्र में आप एक महीने में 25 हजार से 35 हजार रुपए तक आसानी से कमा सकते हैं। वहीं आप बतौर हेयर स्टाइलिस्ट, नेल टेक्नीशियन, फैशन शो स्टाइलिस्ट और मेकअप आर्टिस्ट बन ज्यादा पैसे कमा सकते हैं।

बेहतर करियर हो सकता है
ऑप्थैलमिक असिस्टेंट

मेडिकल सेक्टर में डॉक्टर बनने के अलावा अब करियर के अनगिनत विकल्प हैं। अगर आप इसमें एंट्री करना चाहते हैं, तो ऑप्थैलमिक असिस्टेंट एक बेहतर करियर हो सकता है। इस तरह के ट्रेंड प्रोफेशनल अत्याधुनिक उपकरणों की सहायता से आंखों की जांच करके सटीक डायग्नोसिस तक पहुंचते हैं।

मेडिकल फील्ड में पैरामेडिकल साइंस की भूमिका को आज के दौर में कतई नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। डायग्नोस्टिक तकनीक हेल्थकेयर सेक्टर के लिए सबसे बड़ा वरदान साबित हुई है। आज अमूमन सभी स्पेशलिस्ट आम तौर पर लैब टेस्ट, एक्सरे, ईसीजी, अल्ट्रासाउंड या सीटी स्कैन की रिपोर्ट्स के नतीजों पर ही निर्भर हैं। एक अनुमान के मुताबिक, 2050 तक देश की आबादी करीब 150 करोड़ हो जाएगी। आज आबादी के लिहाज से देश में ऑप्थैलमिक असिस्टेंट, लैब टेक्निशियन या रेडियोलॉजिस्ट जैसे ट्रेंड क्वॉलिफाइड स्टाफ की बेहद कमी है। मौजूदा समय में देश में करीब 10 लाख पैरामेडिकल स्टाफ की शॉर्टेज है।

क्या है ऑप्थैलमोलॉजी?

ऑप्थैलमोलॉजी चिकित्सा विज्ञान की ही एक शाखा है। इसमें आंख संबंधी बीमारियों की जांच व उपचार किया जाता है। ऑप्थैलमिक असिस्टेंट हेल्थकेयर सेक्टर का एंट्री-लेवल जॉब है। ये ऑप्थैलमोलॉजिस्ट, यानी नेत्र चिकित्सक के सह यक के तौर पर अपनी सेवाएं देते हैं। किसी भी अस्पताल या नर्सिंग होम में ऑप्थैलमिक असिस्टेंट मुख्य रूप से मरीजों की मेडिकल इंफॉर्मेशन जुटाने, उपचार के बारे में उन्हें समझाने से लेकर चिकित्सक से पहले मरीजों की कुछ आरंभिक जांच करने तथा उपकरणों को मेंटेन रखने जैसी जिम्मेदारियां निभाते हैं।

जॉब के अवसर

ऑप्थैलमोलॉजी में डिप्लोमा कोर्स करने के बाद युवा सरकारी या प्राइवेट दोनों तरह के क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। ऐसे प्रोफेशनल्स हॉस्पिटल्स, नर्सिंग होम्स, आई क्लीनिक्स, लेजर आई सर्जरी क्लीनिक्स, डायग्नॉस्टिक सेंटर्स आदि में जॉब पा सकते हैं। ऑप्थैलमिक असिस्टेंट अनुभव के बाद टेक्निशियन बनकर खुद का क्लीनिक या आई सेंटर भी खोल सकते हैं।

कोर्स व क्वॉलिफिकेशन

ऑप्थैलमिक असिस्टेंट बनने के लिए देश के कई सरकारी और प्राइवेट संस्थान कोर्स ऑफर कर रहे हैं। फिजिक्स, केमिस्ट्री व बायोलॉजी विषयों से 12वीं पास युवा ऑप्थैलमोलॉजी में 2 वर्ष का डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं।

सैलरी

कोर्स पूरा करने के बाद एक ऑप्थैलमिक असिस्टेंट के रूप में शुरूआत करने पर 10 से 12 हजार रुपए सैलरी आसानी से मिल जाती है। अनुभव बढ़ने पर ऐसे प्रोफेशनल्स 25 से 30 हजार रुपए तक सैलरी पा सकते हैं।

अगर पढ़ाई करते समय नींद आए तो पढ़ें अपना पसंदीदा विषय

क्या आपको अलसुबह पढ़ाई करते समय नींद आती है क्या आप सुबह पढ़ाई करने पर आपको कुछ याद नहीं होता है? अगर हां तो, जान लें कि सुबह-सुबह पढ़ाई करते हुए नींद आने की यह बहुत आम समस्या है। लाखों छात्र ऐसे हैं जो सुबह पढ़ाई करने उठते तो हैं, लेकिन नींद आने के कारण पढ़ाई कर नहीं पाते। नींद की वजह से हमारा दिमाग काम करना बंद कर देता है और हमें कुछ याद नहीं आता। आंखों में नींद घुलने पर हम कुछ समय तो जबरदस्ती पढ़ने की कोशिश करते हैं लेकिन आखिर में जब सब कुछ हमारे बस से बाहर हो जाता है तो हमें बेबस होकर सोना ही पड़ता है। जिसके कारण छात्र चाहकर भी अपना सिलेबस पूरा नहीं कर पाते और दूसरों से पीछे रह जाते हैं। आपकी इस समस्या को ध्यान में रखकर हम यहां पर आसान टिप्स लेकर आए हैं, जिनको फॉलो करने पर आपकी नींद भाग जाएगी और आप आसानी से पढ़ाई कर सकेंगे।

अच्छी रोशनी में करें पढ़ाई

सुबह उठने के बाद बहुत से विद्यार्थी सिर्फ एक स्टडी लैंप जला कर पढ़ाई करने की कोशिश करते हैं। एक लैंप की वजह से कमरे के बाकी हिस्से में तकरीबन अंधेरा रहता है। इस कम रोशनी और शांति वातावरण में नींद आना स्वभाविक है। ऐसी स्थिति में स्टडी रूम की लाइट ठीक रखें।

बेड पर बैठकर कभी न करें पढ़ाई

छात्रों के बीच यह समस्या भी आम है। कई लोग सुबह उठने के बाद बेड पर बैठकर ही पढ़ाई शुरू कर देते हैं। इससे आपको आलस आ सकता है। आप धीरे धीरे लेट कर पढ़ने की कोशिश करेंगे और फिर नींद आपको अपने आगोश में ले लेगी। इसलिए पढ़ाई करते समय हमेशा कुर्सी पर सही ढंग से पीठ सीधी करके ही बैठें। सामने एक टेबल रखें और किताब गोद में रखकर पढ़ने की बजाए सामने टेबल पर रखकर पढ़ें। कुर्सी पर बैठे समय भी अपने हाथ या पांव कुछ-कुछ समय बाद हिलाते रहें। इससे आपके अन्दर सक्रियता बनी रहेगी।

सुबह उठकर ताजी हवा लें और टहले

सुबह उठने के बाद अगर आप तुरंत पढ़ाई करने बैठ जाएंगे, तो जाहिर है आपको नींद आएगी ही। इसलिए उठने के बाद सबसे पहले अपनी दैनिक क्रिया पूरी करें ओर फिर बालकनी में या फिर बाहर जाकर थोड़ी देर टहलें। इससे जहां आपकी एक्सरसाइज हो जाएगी वहीं आपको ताजी हवा भी मिलेगी। इस क्रिया से आपकी नींद पूरी तरह से गायब हो जाएगी। इसके बाद आप कई घंटे तक आराम से पढ़ाई कर सकते हैं।

जल्दी सोएं और जल्दी उठने का रूटीन बनाएं

जल्दी सोने और जल्दी उठने से शारिरिक तंदरुस्ती, समृद्धि व दिमागी शक्ति में बढ़ावा होता है। छात्रों के जीवन में भी इस कथन का उतना ही महत्व है जितना एक आम आदमी के जीवन में। रात को जल्दी सोने से आप प्रयाप्त नींद ले सकते हैं, जिससे आप सुबह बिलकुल तरोताजा उठेंगे। फ्रेश माइंड से चीजें याद रखना बहुत ही आसान होता है। वहीं नींद पूरी होने के बाद पढ़ाई करते वक्त फिर से नींद आने का कोई मतलब नहीं बनता।

सुबह उठने के बाद पानी जरूर पीएं

सुबह उठने के बाद पानी जरूर पीयें। साथ ही पढ़ाई के दौरान भी कुछ कुछ समय बाद पानी पीते रहें। यह न सिर्फ आपकी सेहत के लिए फायदेमंद होगा बल्कि इससे आपको एक और फायदा मिलेगा। ज्यादा पानी पीने से आप को कुछ-कुछ देर बाद अपनी सीट से उठकर टॉयलेट के लिए जाना पड़ेगा, जिससे आपके शरीर की निष्क्रयता टूटेगी और आप सक्रिय बने रहेंगे। साथ ही ज्यादा पानी पीने से दिमाग हाइड्रेटेड व तरोताजा रहता है। इससे सक्रियता बनी रहती है जिससे आसानी से पाठ याद करने में सहायता मिलती है।

नींद आए तो चेहरे पर पानी के छींटे मारें

देर रात तक लगातार पढ़ने के बाद अगर आप सोते हैं, तो सुबह उठने में मुश्किल होती है। थके हुए दिमाग के साथ पढ़ाई करने पर हमें बार-बार नींद आती है। अगर आपके साथ ऐसा हो तो तुंरत उठें और बाथरूम में जाकर अपने चेहरे पर पानी के छींटे मारे। इससे आपकी सुस्ती व उनींदापन दूर होगा और आपका दिमाग नए तरीके से चीजों को याद करने के लिए तरोताजा हो जायेगा। पढ़ने व याद करने के लिए सुबह का समय सबसे अच्छा माना जाता है। सुबह पढ़ा विषय अच्छे से याद होता है। हालांकि अगर पढ़ते हुए आपको नींद आती है तो आप सुबह पढ़ने के लिए वो विषय चुनें जो आपके फेवरेट हो और जिन्हें आप आसानी से समझ व याद कर सकते हैं। सरल विषय या टॉपिक्स को पढ़ने और याद करने के लिए आपको ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। जिससे आपको बोरियत भी नहीं होगी और आप ज्यादा देर तक बैठकर पढ़ाई कर पाएंगे।

लिखकर करें या बोल कर करें पढ़ाई

अगर आप पढ़ाई के दौरान नींद से परेशान रहते हैं तो यह तरीका पढ़ाई करते वक्त होने वाली बोरियत तथा आने वाली नींद को दूर भगाने में काफी हद तक कारगार सिद्ध होता है। हर विषय को इस तरह से बोल बोल कर पढ़ें जैसे कि क्लास में टीचर पढ़ाते हैं। इससे आपका दिमाग सतर्क बना रहता है और नींद आने की सम्भावना भी कम हो जाती है। इसके अलावा खुद को एक्सप्लेन करके पढ़ने से चीजों को याद करना भी बहुत आसान हो जाता है। इसके साथ ही पाठ को सिर्फ मौखिक रूप से याद करने की बजाये मुश्किल उत्तरों या सवालों को लिखकर भी याद करें।

अंक शास्त्री बनकर संवारा जा सकता है भविष्य

न्यूमरोलॉजी एक बेहद पुरानी प्रैक्टिस है, जिसका सालों से पूरी दुनिया में अभ्यास किया जाता रहा है। अपनी जन्मतिथि और पूरे नाम के आधार पर एक सरल चार्ट बनाकर, आप अपने और दूसरों के लिए संतोषजनक अंतदृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। आज के समय में हर व्यक्ति जानना चाहता है कि उसका भविष्य कैसा होगा। भले ही फिर बात बच्चों की पढ़ाई की हो या फिर कॅरियर की, अंक शास्त्र के जरिए भविष्य की परतों को खोलने की कोशिश की जाती है। अगर आप भी चाहें तो बतौर न्यूमरोलॉजिस्ट या अंक शास्त्री बनकर ना सिर्फ खुद का बल्कि दूसरों का भी भविष्य संवारा जा सकता है। तो चलिए जानते हैं इस करियर क्षेत्र में बारे में विस्तारपूर्वक-

क्या है न्यूमरोलॉजी

कॅरियर एक्सपर्ट बताते हैं कि बहुत से लोग सोचते हैं कि न्यूमरोलॉजी पूरी तरह से कन्फ्यूजिंग मैथ्स, फार्मूला और कई तरह के विभिन्न सिद्धांतों से भरी हुई है। जबकि ऐसा नहीं है। अंक विज्ञान वास्तव में संख्याओं की मदद से दूसरों की समस्याओं से सुलझाने की एक कला है। कुछ लोग यह भी सोचते हैं कि संख्याएं भविष्य कैसे बता सकती हैं। संख्याओं में गहरे अर्थ और प्रासंगिक जानकारी के साथ आपके भविष्य को समझने की शक्ति है। यदि आप ज्योतिष से अवगत हैं, तो निश्चित रूप से आप जानते हैं कि ज्योतिष व्यक्ति के जन्म की तारीख, समय और जन्म के समय के माध्यम से भविष्य की भविष्यवाणी करने का एक तरीका है। कुंडली के माध्यम से ज्योतिषी व्यक्ति के भविष्य और जीवन से जुड़ी जानकारी बताते हैं। ठीक उसी तरह, न्यूमरोलॉजी भी काम करती है।

क्या होता है काम

कॅरियर एक्सपर्ट के अनुसार, न्यूमरोलॉजिस्ट व्यक्ति के जन्म की तारीख का उपयोग उसके व्यक्तित्व लक्षण, भाग्य, घटनाओं और परिस्थितियों का अनुमान लगाने के लिए करते हैं। ज्योतिष की तरह, न्यूमरोलॉजी व्यक्ति के जीवन का एक खाका प्रदान करती है जो काफी सटीक है। न्यूमेरोलॉजिस्ट बनने के कई तरीके हैं। लेकिन किसी चीज में विशेषज्ञ बनने के लिए, आपको कला को पूरी तरह से सीखना होगा। ऐसे कई विकल्प हैं जिनके माध्यम से आप न्यूमेरोलॉजी सीख सकते हैं और न्यूमरोलॉजी विशेषज्ञ बन सकते हैं। इसके लिए कोई शैक्षणिक योग्यता का होना आवश्यक नहीं है। आज कई न्यूमरोलॉजी एक्सपर्ट खुद ही सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कोर्स प्रदान करते हैं। इन कोर्स को करने से आपको अंक शास्त्र और नंबरों के पीछे की गहराई को समझने में मदद मिलती है। इसके बाद आप बतौर एक प्रोफेशनल न्यूमरोलॉजिस्ट बनकर काम कर सकते हैं। वैसे इन दिनों न्यूमरोलॉजी के क्षेत्र में ऑनलाइन कोर्स का चलन भी काफी बढ़ गया है।

व्यक्तिगत योग्यता

कॅरियर एक्सपर्ट बताते हैं कि जहां तक प्रश्न व्यक्तिगत योग्यता का है तो इसके लिए सबसे जरूरी है कि आपके भीतर अंकों व उसकी गहराई को जानने की इच्छा हो। इस क्षेत्र में चीजों को सीखने व समझने के लिए बेहद धैर्य की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, दूसरों की परेशानी को सुनकर सटीक अनुमान लगाना भी आपको आना चाहिए। बेहतर कम्युनिकेशन स्किल्स आपके काम को आसान बनाते हैं।

संभावनाएं

आज के समय में हर व्यक्ति जानना चाहता है कि उसका भविष्य कैसा होगा और इसलिए अनुभवी न्यूमरोलॉजिस्ट हमेशा डिमांड में रहते हैं। आप चाहें तो स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकते हैं या फिर शुरूआत में किसी अनुभवी न्यूमरोलॉजिस्ट के साथ मिलकर काम करना अच्छा रहेगा। इसके अलावा, कई मीडिया हाउस भी न्यूमरोलॉजी शो प्रसारित करते हैं, जिनके लिए अनुभवी न्यूमरोलॉजिस्ट की आवश्यकता होती है।

दो दिवसीय एआई एवं फ्यूचर स्किल्स ट्रेनिंग कार्यशाला सफलतापूर्वक सम्पन्न

श्रीगंगानगर। बीकानेर टेक्निकल यूनिवर्सिटी के तत्वावधान में आत्म वल्लभ जैन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में कंप्यूटर एवं मैनेजमेंट विभाग के संयुक्त सहयोग से आयोजित दो दिवसीय एआई एंड फ्यूचर स्किल्स ट्रेनिंग कार्यशाला बुधवार को सम्पन्न हुई। छात्राओं को आधुनिक तकनीक के व्यावहारिक उपयोग से परिचित कराकर 'लर्न, क्रिएट, इनोवेट, गेट फ्यूचर रेडी' के ध्येय के साथ बदलती तकनीकी आवश्यकताओं और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने के उद्देश्य से आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन 237 छात्राओं ने भाग लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित अत्यंत उपयोगी एवं व्यावहारिक जानकारियां प्राप्त कीं। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के संकाय सदस्यों की दक्षता वृद्धि के लिए विशेष फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) का भी सफल आयोजन किया गया। द्वितीय दिवस के सत्र में जोधपुर से पधारे मुख्य प्रशिक्षक मोहम्मद अबुजर अंसारी ने छात्राओं को रिज्यूमे एवं सीवी निर्माण, विभिन्न एआई टूल्स के प्रभावी व रचनात्मक उपयोग तथा करियर निर्माण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया।

उन्होंने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक दौर में एआई टूल्स का सही व रचनात्मक प्रयोग विद्यार्थियों की पढ़ाई, कौशल विकास तथा रोजगार के नए अवसरों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यक्रम के अंतिम चरण में आयोजित एफडीपी सत्र के दौरान महाविद्यालय के समस्त फैकल्टी सदस्यों को ऐसे एआई टूल्स तथा तकनीकों से अवगत कराया गया, जिनका उपयोग वे शिक्षण, लेसन प्लानिंग, अध्ययन सामग्री तैयार करने, विद्यार्थियों के उचित मार्गदर्शन तथा शैक्षणिक व प्रशासनिक कार्यों को अधिक सरल एवं प्रभावी बनाने में कर सकते हैं। इस संपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल आयोजन में महाविद्यालय के कंप्यूटर विभागाध्यक्ष संजय गुप्ता, डॉ. निक्की शर्मा एवं दीपक कक्कड़ का सराहनीय सहयोग रहा। इस मौके पर आत्म वल्लभ जैन शिक्षा न्यास के अध्यक्ष अमरचंद बोरड़, सचिव नरेश जैन एवं कोषाध्यक्ष दीपक जैन विशेष रूप से मौजूद रहे। महाविद्यालय निदेशक डॉ. संजय अरोड़ा एवं प्राचार्या डॉ. पंकज लता ने दो दिवसीय एआई एंड फ्यूचर स्किल्स ट्रेनिंग कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए बीकानेर टेक्निकल यूनिवर्सिटी, प्रशिक्षकों, महाविद्यालय स्टाफ सदस्यों एवं छात्राओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि एआई एवं नवीन तकनीकों का ज्ञान आज विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

शुक्रवार को जिले के 1.78 लाख से अधिक मतदाता करेंगे 120 वार्डों के लिए मतदान

हनुमानगढ़। राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान के निर्देशानुसार नगर निकाय आम चुनाव-2026 के लिए द्वितीय चरण में जिले के तीन नगरीय निकायों हनुमानगढ़, पीलीबंगा और गोलूवाला में शुक्रवार को मतदान होगा। द्वितीय चरण के लिए जिले के 3 नगर निकायों के 120 वार्डों के लिए कुल 193 मतदान केंद्र स्थापित किए गए हैं, जहां कुल 1,78,275 पंजीकृत मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

उप जिला निर्वाचन अधिकारी (एडीएम) उम्मेदी लाल मीना ने बताया कि शुक्रवार को होने वाले द्वितीय चरण के मतदान में 3 नगर निकाय शामिल है। नगर परिषद हनुमानगढ़ के 60 वार्डों के लिए 133 मतदान केंद्र बनाए गए हैं, जहां 1,34,264 मतदाता मतदान करेंगे। नगर पालिका पीलीबंगा के 35 वार्डों के लिए 35 मतदान केंद्र स्थापित किए गए हैं, जहां 30,811 मतदाता मतदान करेंगे। नगर पालिका गोलूवाला के 25 वार्डों के लिए 25 मतदान केंद्र बनाए गए हैं, जहां 13,200 मतदाता मतदान करेंगे।

शुक्रवार को होने वाले मतदान वाले तीनों नगरीय निकायों में ईवीएम स्ट्रॉन्ग रूम स्थापित किए गए है। हनुमानगढ़ नगर परिषद के लिए जंक्शन स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज, पीलीबंगा नगर पालिका के लिए राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोलूवाला नगर पालिका के लिए गोलूवाला सिंहागान स्थित पीएमराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्ट्रांग रूम बनाए गए है। गुरुवार को मतदान दल इन्हीं ईवीएम संग्रहण स्थल से रवाना होंगे। मतदान सम्पन्न होने के बाद मतदान सामग्री का संग्रहण तथा 14 सितंबर, 2026 को होने वाली मतगणना का कार्य भी संबंधित रिटर्निंग अधिकारियों की देखरेख में इन्हीं स्थलों पर संपन्न कराया जाएगा।

निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार प्रथम चरण में नगर पालिका नोहर, भादरा, संगरिया, टिब्बी एवं रावतसर में बुधवार को मतदान हुआ। वहीं द्वितीय चरण में जिले के 3 नगर निकाय नगर परिषद हनुमानगढ़ तथा नगर पालिका गोलूवाला एवं पीलीबंगा में 11 सितंबर, 2026 को प्रातः 7 बजे से सायं 6 बजे तक मतदान होगा। दोनों चरणों की मतगणना 14 सितंबर 6 को संपन्न कराई जाएगी। इससे पहले बुधवार को पांच नगर निकायों के चुनाव करवाये जा चुके हैं। इस तरह से अब दूसरा और अन्तिम चरण आरंभ हो गया है। वन स्टेट वन इलेक्शन की मुहिम के तहत यह चुनाव करवाये जा रहे हैं।

स्काउट-गाइड तथा विद्यार्थियों ने रंगोली व रैली से दिया मतदाता जागरूकता का संदेश

5

श्रीगंगानगर। लोकतंत्र के पर्व में जन-जन की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बुधवार को मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हिंदुस्तान स्काउट एवं गाइड, राजस्थान राज्य तथा आत्म वल्लभ जैन पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में विद्यालय प्रांगण में आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने आकर्षक रंगोली सजाकर तथा मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदाताओं को नगर निकाय चुनाव में शत-प्रतिशत मतदान करने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय कॉर्डिनेटर मुकेश सेठी ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने 'मेरा वोट, मेरा अधिकार', 'पहले मतदान, फिर जलपान' तथा 'जागरूक नागरिक, मजबूत लोकतंत्र' आदि संदेश लिखकर आकर्षक रंगोली का निर्माण किया।

विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती ममता अरोड़ा जैन ने बताया कि तत्पश्चात् कक्षा 6वीं तथा 7वीं के विद्यार्थियों ने प्रभारी सनप्रीत कौर के नेतृत्व में मतदाता जागरूकता रैली निकाली। हाथों में स्लोगन लिखी पट्टिकाएं व बैनर थामे विद्यार्थियों ने अनुशासित ढंग से रैली द्वारा आमजन को बिना किसी भय, लालच या भेदभाव के अनिवार्य रूप से मताधिकार का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एसीबीईओ सुनील दामड़ी तथा विशिष्ट अतिथि स्वीप प्रभारी राकेश बंसल, हिंदुस्तान स्काउट-गाइड प्रभारी संदीप मांझू, श्रीमती मीनू एवं विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती ममता अरोड़ा जैन विशेष रूप से मौजूद रहे।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए एसीबीईओ सुनील दामड़ी एवं स्वीप प्रभारी राकेश बंसल ने कहा कि लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने में भावी पीढ़ी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने रंगोली तथा रैली कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन आमजन में मतदान के प्रति कर्तव्य बोध जगाते हैं। स्काउट गाइड प्रभारी संदीप मांझू ने सामाजिक सरोकारों में स्काउट्स एवं गाइड्स के साथ-साथ विद्यार्थियों की निरंतर सहभागिता को प्रेरणादायक बताया। कार्यक्रम के दौरान सभी ने शत-प्रतिशत मतदान के लिए बढ़-चढ़कर योगदान देने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य श्रीमती ममता अरोड़ा जैन तथा विद्यालय कॉर्डिनेटर मुकेश सेठी ने अतिथियों को पक्षी घर व परिंडे भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्यार्थी, स्काउट-गाइड, विद्यालय स्टाफ सदस्य एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रथम चरण में हनुमानगढ़ जिले में 84.80 प्रतिशत मतदान, पांचों नगर निकायों में शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ मतदान

हनुमानगढ़। नगरीय निकाय आम चुनाव-2026 के प्रथम चरण के तहत जिले के पांच नगर निकायों नोहर, भादरा, संगरिया, रावतसर और टिब्बी के 170 वार्डों के लिए 176 मतदान केंद्रों पर बुधवार को मतदान शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न हुआ। मतदान प्रातः 7 बजे से सायं 6 बजे तक चला तथा निर्धारित समय तक मतदान केंद्रों पर पंक्ति में खड़े सभी मतदाताओं को मतदान का अवसर दिया गया। प्रथम चरण में कुल 1,45,152 पंजीकृत मतदाताओं में से 1,23,082 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया, जिससे जिले में कुल 84.80 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया।

मतदान के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. खुशाल यादव एवं जिला पुलिस अधीक्षक बी. आदित्य ने संगरिया एवं टिब्बी नगर निकायों के विभिन्न मतदान केंद्रों, स्ट्रॉन्ग रूम तथा मतगणना स्थलों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। अधिकारियों ने मतदान दलों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। प्रशासन एवं पुलिस के समन्वित प्रयासों से सभी मतदान केंद्रों पर मतदान सुचारू रूप से संपन्न हुआ।

नगर निकायवार मतदान प्रतिशत में संगरिया सबसे आगे रहा, जहां 27,575 मतदाताओं में से 24,005 मतदाताओं ने मतदान कर 87.05 प्रतिशत मतदान दर्ज कराया। टिब्बी में 10,357 में से 9,005 यानी 86.95 प्रतिशत, भादरा में 33,940 में से 29,149 यानी 85.88 प्रतिशत, रावतसर में 31,676 में से 27,083 अर्थात 85.50 प्रतिशत तथा नोहर में 41,604 में से 33,840 अर्थात 81.34 फ़ीसदी मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

उल्लेखनीय है कि जिले के शेष तीन नगर निकायों हनुमानगढ़, गोलूवाला एवं पीलीबंगा में द्वितीय चरण का मतदान 11 सितंबर, 2026 को होगा, जबकि जिले के सभी आठ नगर निकायों की मतगणना 14 सितंबर, 2026 को निर्धारित की गई है।

निर्वाचन कार्य में अनुशासनहीनता पर दो मतदान अधिकारियों को कारण बताओ जारी

श्रीगंगानगर। नगर निकाय चुनाव-2026 में अनुशासनहीनता पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा दो मतदान अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। नगर निकाय चुनाव 2026 के अंतिम प्रशिक्षण एवं रवानगी हेतु 8 सितम्बर 2026 को उपस्थित होने हेतु मतदान अधिकारियों को निर्देशित किया गया था।

उप जिला निर्वाचन अधिकारी एवं एडीएम प्रशासन सुभाष कुमार ने बताया कि नगर पालिका सूरतगढ़ के मतदान दल संख्या 43 के द्वितीय मतदान अधिकारी अजय कुमार एवं नगर पालिका रायसिंहनगर के मतदान दल संख्या 04 के तृतीय मतदान अधिकारी दीपक कुमार के अनुपस्थित रहने पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी सुभाष कुमार द्वारा कारण बताओ नोटिस जारी कर दो दिवस में स्पष्टीकरण चाहा गया है।

निर्धारित अवधि में स्पष्टीकरण प्राप्त न होने अथवा अनुपस्थिति का कारण संतोषजनक न होने पर निलंबित कर लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के तहत कार्यवाही की जावेगी।

सेठी परिवार ने किया मतदान, लोकतांत्रिक जिम्मेदारी निभाने का दिया संदेश

संगरिया। नगरपालिका चुनाव को लेकर संगरिया में बुधवार को मतदान प्रक्रिया के दौरान मतदाताओं में खासा उत्साह देखने को मिला। इसी क्रम में पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष पवन सेठी ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ मतदान केंद्र पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष पवन सेठी के साथ कृष्ण सेठी, अनमोल सेठी (अध्यक्ष, युवा कांग्रेस संगरिया), अर्पित सेठी, अंकित सेठी, नीना सेठी, कविता सेठी, अपला सेठी, अंचल सेठी एवं काजल सेठी ने भी मतदान किया।

मतदान के दौरान सेठी परिवार के सदस्यों ने लोकतंत्र के इस महापर्व में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए अपने मताधिकार का उपयोग किया। परिवार के सदस्यों ने आम मतदाताओं से भी मतदान केंद्र तक पहुंचकर अपने मत का प्रयोग करने की अपील की।

पवन सेठी ने कहा कि मतदान लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। प्रत्येक मतदाता को बिना किसी दबाव के अपने विवेक के अनुसार मतदान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मजबूत लोकतंत्र के लिए प्रत्येक योग्य मतदाता की भागीदारी आवश्यक है। वहीं युवा कांग्रेस अध्यक्ष अनमोल सेठी सहित परिवार के अन्य सदस्यों ने भी मतदान को नागरिक जिम्मेदारी बताते हुए अधिक से अधिक लोगों से मतदान करने का आह्वान किया।

संगरिया के वार्ड 18 में प्रत्याशियों ने ली सद्भाव शपथ

संगरिया। स्थानीय नगरपालिका चुनावी मुकाबले के बीच वार्ड 18 में सौहार्द की अनूठी मिसाल देखने को मिली। मतदान सम्पन्न होने के बाद मतदान केंद्र मदर्स प्राइड एकेडमी के बाहर प्रयास समिति के प्रभारी नवीन सेठी एवं कपिल करवा के नेतृत्व में प्रत्याशी निशा गोयल एवं मनीषा गोयल ने समर्थकों और वार्डवासियों की मौजूदगी में सामूहिक शपथ ली।

दोनों प्रत्याशियों ने संकल्प लिया कि 14 सितंबर को जीत हार चाहे किसी की हो, वार्ड का विकास और आपसी भाईचारा सर्वोपरी रहेगा। चुनावी प्रतिस्पर्धा को व्यक्तिगत द्वेष से दूर रखते हुए परिणाम के बाद भी मिलकर काम करने, स्वच्छता, वार्ड की सुंदरता और सामाजिक सद्भाव के लिए प्रयास करने की शपथ ली गई। मतदान केंद्र के बाहर हुई इस पहल ने मतदाताओं का

ध्यान खींचा। समिति ने संदेश दिया कि चुनाव कुछ दिनों की प्रक्रिया है, लेकिन रिश्ते और सामाजिक जिम्मेदारियां जीवनभर की होती हैं। जीत किसी की, विकास सबका, इसी संदेश के साथ वार्ड 18 में चुनावी प्रतिस्पर्धा के बीच भाईचारे की नई तस्वीर सामने आई। इस अवसर पर पूर्व पार्षद दुर्गादत्त गोयल, श्याम लाल सोमानी, अर्जुनदेव अंगी, आनंद गोस्वामी, पूनम चंद गोयल, जगदीश मोंगा, मुकेश सिंगला, आनंद गोयल, प्रशांत गोयल, सूरजाराम भोबिया, डब्बू गोयल, गणेश गोयल, टेकचंद जैन, दीपक गर्ग, आशु गुप्ता, केतन जैन सहित बड़ी संख्या में वार्डवासी शामिल रहे।

भूदान एवं सर्वोदय आन्दोलन के प्रणेता व विश्व शान्ति दूत आचार्य विनोबा भावे

1

भूदान आंदोलन एवं सर्वोदय आंदोलन के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रसिद्ध गांधीवादी नेता तथा विश्व शांति दूत थे। 11 सितम्बर, 1895 को जन्मे विनोबा भावे के बचपन का नाम विनायक नरहरि भावे था, जो बाद में आचार्य विनोबा भावे व संत विनोबा भावे कहलाये। उनमें निर्णय लेने तथा उस पर उसी क्षण कार्य करने की महान क्षमता थी। माँ से मिले संस्कारों के कारण इनमें धर्म और संस्कृति के प्रति अनुराग, प्राणी मात्र के कल्याण की भावना तथा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण था। इनका पूरा जीवन कर्तव्यपालन का जीवन रहा। विनोबा जी आध्यात्मिक संत थे। विनोबा जी मन्दिर, मस्जिद तथा चर्च को समान प्यार करते थे। विनोबा जी कहते थे कि कोई भी धर्म मानव-धर्म के विरूद्ध नहीं है, जो हमें सबके साथ भलाई से व्यवहार, सत्य, प्रेम और संयम सिखाता है। मूर्ति पूजा का खंडन करते हुए विनोबा जी ने बताया कि मनुष्य का नैतिक व्यवहार ही उसे ईश्वर प्राप्ति तक ले जा सकता है। विनोबा भावे बाल ब्रह्मचारी थे। उनकी माँ रूकमणी देवी से ही उन्हें ब्रह्मचारी की प्रेरणा मिली। उनकी माँ कहती थी - 'जो विवाह नहीं करता तथा शुद्ध ब्रह्मचारी होता है, वह 42 पीढ़ियों को पवित्र कर देता है।' विनोबा भावे पर उनके दादा शम्भुराव भावे के व्यक्तित्व का प्रभाव बहुत अधिक पड़ा तथा उनमें छुआछुत के प्रति वितृष्णा का भाव उदित हुआ। उन्होंने 'ब्रह्म विद्या मंदिर' की स्थापना की तथा समाज में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन बताया। 'थॉट्स ऑफ एज्युकेशन' में आचार्य भावे के शिक्षा सम्बन्धी विचार अंकित है। उन्होंने 'स्त्री शक्ति' पुस्तक लिखी, जिसमें स्त्री शक्ति के महत्व को बताया। उन्होंने संगीत सीखा तथा भारतीय गायन वाद्य संगीत पर कुछ पुस्तकें भी लिखीं। आचार्य भावे ने श्रीमद्भागवत गीता का मराठी अनुवाद भी किया। उन्हें 20 भाषाओं का ज्ञान था। वे धार्मिक आडम्बरों व धर्मकाण्डों के कट्टर दुश्मन थे।

विनोबा भावे मेधावी छात्र थे तथा उनका स्वभाव चिंतनशील था तथा वे खेलकूद में अधिक रुचि नहीं लेते थे। मौन साधना का अभ्यास उन्हें बाल्यकाल से हो गया था। वे 'केसरी' मराठी दैनिक के नियमित पाठक थे तथा उनके मन में राष्ट्र के प्रति स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने की उत्कृष्ट अभिलाषा थी। सन् 1951 में हैदराबाद के पास शिवराम पल्ली नामक स्थान पर सर्वोदय विचारधारा को मानने वालों का सम्मेलन हुआ था, उसके लिए विनोबा जी ने वर्धा से पैदल आकर भाग लिया। वहां के गरीब, हरिजन लोगों ने उन्हें बताया कि उनके पास जोतने के लिए न तो जमीन है, न आजीविका के लिए व्यवसाय है। भूमिहीन, साधनहीन हम लोग तड़प रहे हैं। उन गरीबों की व्यथा सुनकर विनोबा जी विचार करने लगे कि इन लोगों को जमीन मिलने से अवश्य राहत मिल सकती है। उन्होंने लोगों के समक्ष गरीब, हरिजनों की पीड़ा प्रस्तुत की तथा लोगों से जमीन दान करने की अपील की। गांव के निवासी रामचन्द्र रेड्डी पर इसका प्रभाव पड़ा और उन्होंने अपनी सौ एकड़ भूमि भूमिहीन, साधनहीन लोगों को दान कर दी। यहीं से आचार्य विनोबा भावे का भूदान का कार्यक्रम शुरू हो गया और धीरे-धीरे इस भूदान आंदोलन ने विशाल रूप ले लिया तथा सम्पूर्ण विश्व में हलचल मचा दी। उन्होंने सन् 1960 में चम्बल यमुना के डाकूग्रस्त क्षेत्र में डाकुओं का आत्मसमर्पण करवाकर, उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ा।

जब देश सेवा की चर्चाएं होती थी, तो विनोबा जी कहते थे कि हमें सर्वस्व त्याग के लिए तैयार रहना चाहिए। सब कुछ न्योछावर करने के लिए यदि हम तैयार नहीं हैं तो सब बातें बेकार हैं। उन्होंने विद्यार्थियों में देश सेवा चेतना के लिए 'विद्यार्थी मण्डल' नामक संस्था गठित की तथा एक वाचनालय भी चलाया। गांधीजी के काशी विद्यापीठ समारोह में भाषण से विनोबा भावे प्रभावित हुए तथा गांधीजी के आश्रम में रहकर गांधीजी के आदर्शों व सिद्धांतों का निष्ठा से पालन किया। युद्ध विरोधी सत्याग्रह के सिलसिले में विनोबा जी तीन बार बंदी बनाये गये और कारागृह में रहे। उन्होंने स्वराज्य के सम्बन्ध में, जेल में जो व्याख्यान दिये, वे एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए तथा उन्होंने आदर्श राज्य पद्धति के दस लक्षण बताये, उनके अनुसार शासन व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये, जिसे आम आदमी समझ सके, शासन चलाने में कम से कम खर्चा हो, लोगों पर कानून की कम से कम पाबंदियां लगाई जाए, राज्य के लोगों की कम से कम रखवाली करनी पड़े, शासन के अधिकारों का व्यापक परिमाण में बंटवारा हो, राष्ट्र के सब लोगों का सहयोग मिलना चाहिए, शिक्षा तटस्थ व राजनीति से मुक्त हो, दुनिया के अन्य राष्ट्रों से भ्रातृ भाव होना चाहिए आदि मुख्य हैं। विनोबा जी के विचार तथा उनका दर्शन मौलिक तथा मनुष्यता पर आधारित था।

विनोबा भावे के दर्शन के अनुसार मजदूरों में प्रतिष्ठा हमें बढ़ानी है, श्रम के प्रति निष्ठा, आदर तथा बल देने का आग्रह उन्होंने इसलिये किया था, क्योंकि लोग श्रम को हेय की दृष्टि से देखने लगे थे। विनोबा भावे भारत सरकार की कृषि व शिक्षा नीति से संतुष्ट नहीं थे, उनके अनुसार गांधीजी की बुनियादी शिक्षा के अनुसार शिक्षा को श्रम आधारित बना दिया जाये, तो विद्यार्थी जगत में फैली अशांति और शिक्षित बेरोजगारों की समस्या हल हो जाएगी। उनके कथनानुसार समस्त संसार में शिक्षा का नियंत्रण सरकार के हाथ में नहीं होना चाहिए, बल्कि ज्ञानी पुरुषों के हाथ में होना चाहिए। विनोबा भावे जी वास्तव में अहिंसक क्रांतिकारी थे और वे समाज में अपरिग्रह, अहिंसा जैसे नैतिक गुणों की स्थापना कर समाज की चेतना को ऊर्ध्वगामी बनाना चाहते थे। उनके भीतर क्रांति की ऐसी कल्पना थी, जो पूंजीवाद और साम्यवाद से हटकर थी। विनोबा भावे शासनविहीन और शोषणविहीन समाज की स्थापना के पक्ष में थे। वे गांधीजी की तरह हिंसा का विरोध करते थे तथा अहिंसा व विश्व शांति पर बल देते थे।

विनोबा भावे विश्व शांति स्थापना की ओर समर्पित थे। उन्हें शांति दूत कहा जाता है। उनका कहना था कि जब निरंतर शस्त्रों का संग्रह होगा तथा नये प्रकार के अस्त्र-शस्त्र बनेंगे तो राष्ट्रों के मध्य तनाव बढ़ेंगे। एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए जाएंगे, ऐसे वातावरण में विश्व शान्ति की स्थापना नहीं की जा सकती। विश्व शांति पर ही मानव समाज का उत्थान व कल्याण निर्भर है, इसलिये सब लोगों को मिलकर विश्व शांति हेतु कार्य करना चाहिए। विनोबा जी ने वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, भागवत, आदि शंकराचार्य के ग्रंथ तथा तुकाराम, ज्ञानदेव, एकनाथ आदि संतों के ग्रंथों से सार-सार चुनकर इनके संकलन प्रकाशित किए। विनोबा भावे देवनागरी को विश्व लिपि के रूप में देखना चाहते थे। विनोबा भावे ने संसार में 'सर्वधर्म समभाव' का संदेश फैलाने पर बल दिया। विनोबा भावे को सन् 1958 में 'मेगसेसे पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था तथा मरणोपरांत 1983 को 'भारत रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया। विनोबा जी वास्तव में गांधीवादी विचारक थे तथा गांधीजी के सच्चे आध्यात्मिक उत्तराधिकारी थे, जिन्होंने गांधीजी की सर्वोदय सम्बन्धी विचारधारा को व्यवहारिक रूप देने के लिए भूदान, ग्रामदान तथा सम्पत्ति दान का मार्ग अपनाया, जो उनकी मौलिक देन है। विनोबा भावे ने लोकशक्ति जगाकर देश में वास्तविक लोकतंत्र को स्थापित करने का जीवनभर प्रयास किया। उनकी मृत्यु 15 नवम्बर, 1982 को हुई। विनोबा भावे जैसे आजीवन कर्तव्य पालन करने वाले आध्यात्मिक संत के विचार दर्शन को आज अपनाने की जरूरत है। देशवासी उनकी जयंती पर उन्हें शत-शत् नमन् करते हैं।